65. IKKISAVIN SADI MEIN SWAMI VIVEKANANDA KE SANDESH KI PRASANGIKTA

संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका
ISSN : 2347–4041
Impact Factor 2.003
वर्ष 7, अंक 7, मार्च 2018

इक्कीसवीं सदी में स्वामी विवेकानन्द के सन्देश की प्रासंगिकता

डॉ आराधना
असिसटेंट प्रोफेसर
गुरू गोबिन्द सिंह कॉलेज फॉर विमैन-26,
चण्डीगढ़, मकान नं. 91, सैक्टर-4, मनसा
देवी कॉम्पलैक्स, पंचकूला (हरियाणा)

21वी सदी विज्ञान की सदी है। वैज्ञानिक आविष्कार मनुष्य के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन ले आए हैं। विश्व सिमट कर एक गांव में परिवर्तित हो गया है। इन आविष्कारों के कारण आज का मनुष्य अत्यन्त शक्तिशाली हो गया है। उसने प्रेंति के अपार रहस्यों को जान लिया है। जल, बिजली तथा भाप पर उसका अधिकार हो गया है। आकाश उसके शब्दों को विश्व के एक कोने से दूसरे कोने में ले जाने में समर्थ है। पृथ्वी उसके चरणों में है तो गगन उसकी मुट्ठी में। परन्तु मनुष्य का यह विकास एकांगी है। उसकी बुद्धि का विकास तो हो गया है परन्तु उसके हृदय की भावनाएँ पीछे रह गई है। आज भी मनुष्य दूसरों के अधिकार छीन रहा है। कमज़ोर व्यक्तियों के जीवन को मसल रहा है। वह अर्थ, ज़मीन तथा सत्ता प्राप्ति के लिए युद्ध छेड़ रहा है। वह दूसरों को मिट्टी में मिलाकर अपनी उन्नति करना चाहता है। वह प्रेम, सत्य तथा न्याय के साथ आपसी झगड़ों को सुलझाने के स्थान पर बल प्रयोग करता है। अब भी वह हिंसा से प्रेम करता है। उसके हृदय में विद्यमान क्रोध का सर्प चहुँ ओर विष फैला रहा है। अपहरण, शोषण, लोभ, वासना तथा विषमता की कुप्रवृत्तियां उसे घेरे हुए हैं। इस प्रकार एक ओर तो आज का मनुष्य आकाश पर चढ़कर ग्रहों नक्षत्रों की आवाज़ सुन रहा है तो दूसरी ओर मानवता को अपने पैरों तले रौंद रहा है। उसका शरीर दूसरों के खून से रंगा हुआ है। उसके काम पशुओं से भी बदतर हैं।

वर्तमान सदी में प्रत्येक मनुष्य का जीवन बेहतर बनाने के लिए आवश्यकता है मानव की बुद्धि तथा हृदय के समन्वय की। हृदय के साथ बुद्धि का योग ही उसके आचरण को संतुलित कर सकता है। ईसामसीह, महात्मा बुद्ध, गुरूनानक, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती तथा महात्मा गाँधी जैसे अनेक महापुरूषों ने समय-समय पर लोककल्याण के लिए उपदेश दिया परन्तु मनुष्य ने सदा ही इन महापुरूषों को वाचिक सम्मान दिया है। यदि हम सच में धरती को युद्ध, घृणा, मोह, लोभ तथा अहंकार से मुक्त करना चाहते हैं; धरती पर धर्म तथा दया का दीपक जलाना चाहते हैं तो हमें स्वामी विवेकानन्द की शरण में जाना होगा। उनके दर्शन तथा विचारों को अपने जीवन में लागू करना होगा। स्वामी जी का सन्देश ही मानवता के इस डूबते हुए जहाज को किनारे तक पहुँचा सकता है।

आज सम्पूर्ण विश्व युद्ध, आतंकवाद, धार्मिक विद्वेष, गरीबी, शोषण, महिलाओं की दुर्गति तथा भयानक रोगों जैसी अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहा है। इन समस्याओं का समाधान करने में स्वामी विवेकानन्द का दर्शन तथा विचार अत्यन्त लाभदायक हो सकते हैं। स्वामी जी के विचारों से केवल भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व लाभान्वित हो सकता है। स्वामी विवेकानन्द महान् इसलिए है क्योंकि इनके विचार देश तथा काल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं। इनके विचारों से निसृत होने वाला ज्ञान, प्रेरणा तथा तेज आधुनिक युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन कर सकता है।

Jatinder Kaur
Principal
Guru Gobind Singh College For Women
Sector 26, Chandigarh